Volume-6, Issue-1, January - 2017 • ISSN No 2277 - 8160 | IF : 3.62 | IC Value 80.26

GLOBAL JOURNAL FOR RESEARCH ANALYSIS International

Original Research Paper | Political Science

# "Emerging trend in Indo-Nepal relations"

## ÞHkkjr usiky lEcUèk % mHkjrh çofÙk;kß

**Dr.Surya Bhan Singh**

Assistant Professor & Co-ordinator Deptt. of Political Science Uttarakhand open University, Haldwani, Nainital(263139)

**ABSTRACT**

भारत और नेपाल न केवल भौगोलिक दृष्टि से नजदीक हैं ,वरन सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से काफी नजदीक हैं।दोनों के बीच खुली सीमारेखा और स्वतन्त्रतापूर्वक एक दूसरे के नागरिकों का आवागमन इस बात के प्रमाण हैं कि ये सम्बन्ध दो देशो के बीच के सम्बन्ध से आगे , उनके जनसामान्य के बीच सीपित भाईचारे का सम्बन्ध है ।इसे रोटी और बेटी के समंध के रूप में कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी ,लेकिन हालिया वर्षो में नेपाल में राजनीतिक परिवर्तनों की प्रक्रिया ने भारत नेपाल संबंधों को जटिल बना दिया है ।विशेषरूपसे नेपाल के तराई क्षेत्र के मधेसी समुदाय द्वारा भारत से होने वाले व्यापार को बाधित करने के उपरान्त उत्पन्न समस्या के निराकरण के लिए नेपाल ने चीन से सहयोग प्राप्त किया ,तथा अधिकृत रूप से कहा कि चीन के रूप में उनके पास एक विकल्प उपलब्ध है।इससे भारत नेपाल सम्बन्ध द्विपक्षीय से आगे त्रिपक्षीय होता हुआ दिखाई देता है ।क्योंकि अब भारत नेपाल के सम्बन्ध को नेपाल और चीन के बीच बढता सम्बन्ध प्रभावित भी कर रहा है ।इस लिए इस शोधपत्र में उक्त आलोक में भारत नेपाल के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है।जिसमें यह पाया है कि नेपाल भी 21 वी शदी के झंझावातों से अपने आप को पृथक नहीं कर सकता । साथ ही भारत को भी नेपाल की भूराजनीतिक और रणनीतिक स्थिति के अनुरूप अपनी भूमिकाओं को पुनर्परिभाषित करते हुए आगे बढ़ना होगा ।

**KEYWORDS** : द्विपक्षीय सम्बन्ध, त्रिपक्षीय सम्बन्ध, भूराजनीतिक स्थिति, रणनीतिक स्थिति,आधारभूत ढाँचा।

### i:Lrkouk &

नेपाल की आबादी का बड़ा हिस्सा दलित, जनजाति और मधेशी समुदाय से है। जिनका व्यापक स्तर पर शोशण हुआ है। इनकी सुरक्षा और इनके अधिकारों के नाम पर ही माओवादियों ने अपनी लड़ाई प्रारम्भ की लेकिन किसी यथोचित परिणाम तक नहीं पहुँच सके। नेपाल के तराई क्षेत्र में रहने वाले मधेशियों के भारत से सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक नजदीकियाँ रही हैं। ऐसा इसलिए कि ये भारतीय मूल के नेपाली नागरिक हैं। फलस्वरूप भारतीय समाज और सरकार को मधेशी समुदाय भावनात्मक रूप से अपने नजदीक महसूस करता रहा है। परन्तु मधेशी आन्दोलन के समय भारत–नेपाल के बीच आर्थिक गतिविधियों पर गतिरोध, सीमा पर उत्पन्न किया गया। जिससे नेपाल सरकार ने यह माना कि मधेशी आन्दोलन को हवा देने का कार्य भारत कर रहा है।

नेपाल चारों तरफ से जमीनी सीमाओं से घिरा है। इसके उत्तर में चीन, तो पूरब, पश्चिम, और दक्षिण में भारत है। अतीत से ही भारत ने नेपाल को हर संभव सहायता देकर उसकी आवश्यकताओं को काफी हद तक पूर्ण करने का कार्य किया है। इस प्रंकार के संबंधों को आगे बढ़ाने में भारत और नेपाल के बीच हुई शान्ति और मैत्री समझौते का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

### Hkkjr usiky lEcUèk % mHkjrh çofÙk;k &

भारत नेपाल के सम्बन्ध का अध्ययन राजनीतिविज्ञान के अध्येता के लिए एक महत्वपूर्ण विषय है ।विशेषरूप से भारतीय या नेपाली के लिए। क्यों कि दोनों देशों के बीच परंपरागत रूप से ही नजदीकी सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्बन्ध रहे हैं। हालिया वर्षो में यह विषय अध्ययन के लिए और महत्वपूर्ण होगया है क्यों नेपाल में राजनीतिक परिवर्तन की प्रक्रिया ने भारत नेपाल के संबंधों को नया आयाम देने का कार्य किया है । इन्ही आयामों के परिप्रेक्ष्य में भारत नेपाल के सम्बन्ध का अध्ययन इस शोधपत्र में किया गया है । यह सत्य है कि समय–समय पर भारत ने नेपाल का सहयोग कर एक रचनात्मक, भावात्मक सहयोगी होने का परिचय दिया है। हालिया महीनों में नेपाल में आये भीशण भूकंप के बाद त्वरित और विस्तृत सहयोग कर भारत ने अपने दायित्व का निर्वहन किया है। इस कार्य में जहाँ भारत ने एक तरफ आपदा पीड़ितों को राहत पहुँचाई तो दूसरी तरफ क्षतिग्रस्त आधारभूत ढाँचे के पुर्ननिर्माण का भी कार्य किया। इस कार्य में भारतीय सेना ने भी अपना रचनात्मक योगदान दिया है। यह सब सम्भव हुए भारत के संवेदनशील और त्वरित निर्णय लेने की राजनीतिक इच्छा शक्ति के कारण। भारत नेपाल सम्बन्धों का हम जब भी अध्ययन करें तो यह समझना नितांत आवश्यक है कि इसको केवल भारत–नेपाल के परिप्रेक्ष्य से आगे नेपाल भारत और चीन के त्रिकोणात्मक स्वरूप को देखना होगा,क्योंकि समय–समय पर भारत–नेपाल सम्बन्धों पर चीन के दबावों और प्रभावों की छाया भी दिखाई देती है।एक तरफ 1955 में नेपाल–चीन सन्धि के द्वारा पंचशील को मान्यता दी गई तो दूसरी तरफ नेपाल ने तिब्बत को चीन का आन्तरिक मसला स्वीकार किया।

भारत नेपाल सम्बन्धों के अध्ययन में एक और तथ्य महत्वपूर्ण है वह है नेपाल की भौगोलिक और L=rftd स्थति। इसकी वजह से नेपाल और चीन की बढ़ती नजदीकियाँ, नेपाली माओवादियों की भारत के नक्सलवादियों तथा चीन के माओवादियों से नजदीकी रिश्ते भी भारत नेपाल संबंधों को प्रभावित करते रहते हैं।

भारत–चीन के बीच बढ़ती नजदीकियाँ भारत के माथे पर चिंता की लकीर खींचने के लिए पर्याप्त हैं क्योंकि जो नेपाल भारत के लिए बफर स्टेट की स्थिति में है। वह प्रभाव समाप्त हो जाएगा। यह सत्य है कि 21वीं सदी की बढ़ती चुनौतियों और आवश्यकताओं के अनुरूप नेपाल अपनी नीतियों में बदलाव कर रहा है। ऐसे में भारत के समक्ष चुनौती होगी किवह किस प्रकार से अपनों सम्बंधों का ढांचा खड़ा करें कि उनका प्रयोग भारत के विरूद्ध न हो सके। इस दिशा में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की 2014 की नेपाल यात्रा और उस दौरान की गई सन्धियाँ विशेश रूप से उल्लेखनीय हैं। इस दौरान द्विपक्षीय व्यापार हाइड्रोपावर कृशि,पर्यटन, खेल, शिक्षा और संस्कृति सहित विविध क्षेत्रों में कार्य करने पर सहमति बनी।

नेपाल के प्रधानमंत्री के.पी. ओली ने चीन की यात्रा की जिसमें तिब्बत के रास्ते नेपाल को रेल मार्ग से जोड़ने पर सहमति बनी है। इसके अरिरिक्त अन्य 10 समझौते हुए। यह सहमति और समझौते भारत के लिए आर्थिक के साथ–साथ रणनीतिक महत्व भी रखते हैं क्योंकि अभी तक भारत के लिए नेपाल, चीन के संदर्भ में बफर स्टेट की स्थिति में भी रहा है। परन्तु इस रेलमार्ग के बनने के उपरान्त चीन की पहुँच भारत नेपाल सीमा पर भी आसान होगी। अर्थात् चीन की पहुँच भारतीय सीमा तक आसान होगी जो सामरिक दृष्टि से और चुनौतियाँ उत्पन्न करेगा। भारत–नेपाल संबन्धों में महत्वपूर्ण यह है कि कई मौकों पर भारत की सक्रियता की कमी के कारण इसमें तनाव व ठहराव को दिशा मिली, जैसे जब 2015 में नेपाल के द्वारा अपना संविधान लागू किया गया तो भारतीय मूल के मधेशी समुदाय के हितों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं प्राप्त हुआ जिससे नेपाल की तराई/भारत–नेपाल सीमा पर तनाव उन्पन्न हुआ। जिसमें भारत से की जाने वाली आपूर्ति को मधेसी समुदाय ने बांधित किया। तत्समय नेपाल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में चीन का सहयोग किया। साथ ही नेपाल अब यह सुनिश्चित करने का प्रयास कर रहा है कि ऐसी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए उसके पास भारत के अतिरिक्त अन्य विकल्प भी हो। वहीं दूसरी ओर चीन तो ऐसे मौकों की तलाश में बैठा रहता है, उसने अवसर का लाभ उठाया और नेपाल की मदद की। यहाँ पर भारत की निश्क्रियता ने चीन नेपाल संबन्धों को जहाँ नया आयाम लेने का अवसर दिया तो भारत नेपाल संबन्ध किसी रचनात्मक मुकाम की दिशा में बढ़ने से पीछे रह गया। साथ ही चीन नेपाल के माध्यम से भारत पर दबाव और प्रभाव बनाने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ने में सफल रहा। इस प्रकार से चीन का नेपाल में प्रवेश, भारत को घेरने की रणनीति का एक हिस्सा कहा जा सकता है।

यद्यपि नेपाल के लिए भारत के विकल्प के रूप में चीन का चयन आसान नहीं होगा क्योंकि नेपाल के लिए चीन का सबसे नजदीकि बंदरगाह तियानजिन की दूरी लगभग 3000 किमी. है जबकि भारत बन्दरगाह हल्दिया की दूरी 1000 किमी. से अधिक नही है। साथ ही भारत के साथ 24 मार्गों से व्यापार करता है।इसका एक अन्य कारण भी है वह यह कि भारतीय और नेपाली जनसामान्य अपने को एक दूसरे के भावात्मक रूप से नजदीक पाता है , क्योंकि दोनों देशों की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संरचना में काफी हद तक साम्य है।

ऐसे में यह सब संभव है कि 21वीं सदी की चुनौतियों के सापेक्ष नेपाल अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए भारत के साथ चीन को भी एक विकल्प के रूप में स्वीकार करे। इस दिशा में वह चीन के साथ विविध सन्धियों और समझौतों के द्वारा आगे भी बढ़ रहा है। साथ ही वह इस बढ़ते संबन्ध का प्रयोग भारत के साथ सौदेबाजी करने में कर सकता है। ऐसा करता हुआ दिखाई भी दे रहा है। जिसमें उनके कुछ सक्षम पदाधिकारियों ने यहाँ तक कहा कि उनके पास चीन जैसा विकल्प उपलब्ध है।

इस दिशा में भारत को जल्द ही रचनात्मक कदम उठाने होंगे। प्रथम तो यह कि नेपाल के बुनियादी और ढांचागत विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए तथा वहाँ की विविध समुदायों, सेना और राजनीतिक दलों से बात कर उनके प्रगति के सोपान को आगे बढ़ाना चाहिए। यदि भारत ऐसा नहीं करता या नहीं कर पाता है तो निश्चित रूप से नेपाल में चीन को अपने पैर पसारने का अवसर प्राप्त होगा जो दीर्घकालिन रूप से राजनीतिक और रणनीतिक दोनों ही दृष्टियों से भारत के लिए हितकर नहीं होगा।

### fu"d"k %

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि भारत और नेपाल को परम्परागत तरीके और नजरिये समझना युक्तियुक्त नहीं होगा, क्योंकि जहां एक तरफ नेपाल राजनीतिक परिवर्तनों की प्रक्रिया से गुजर रहा है, तो इसके कारण उत्पन्न चुनौतियों के निराकरण के लिए परम्परा से हटते हुए भारत के अतिरिक्त अन्य विकल्प विशेषरूप से चीन के साथ भी जाता हुआ दिखाई दे रहा है ।इस सम्बन्ध के बढ़ने से न केवल भारत नेपाल वरन भारत चीन सम्बन्ध भी प्रभावित होंगे ।क्यों कि इसके द्वारा नेपाल के रास्ते भारत तक चीन की पहुँच बहुत आसान होगी ,जो भारत के लिए न केवल आर्थिक वरन राजनीतिक और रणनीतिक दृष्टि से बड़ा ही चुनौतियों से भरा होगा ।यद्यपि यह आसान नहीं होगा क्यों कि भारत और नेपाल के सम्बन्ध परम्परागत रूप से आत्मीय और भावात्मक रहें हैं । परन्तु असंभव नहीं है ।इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि भारत नेपाल को 21 शदी की चुनौतियों के अनुरूप तैयार होने में अपनी रचनात्मक भूमिका को पुनर्परिभाषित करते हुए उस पर पहल करने का कार्य करे ।जिससे वहाँ पर गरीबी दूर हो सके, बेरोजगारी को कम किया जा सके ,यह कार्य भारत के द्वारा किया जाना ज्यादा आसान होगा, अपेक्षाकृत चीन के क्योंकि नेपाल और भारत का जनसामान्य अपने आप को एक दूसरे के ज्यादा नजदीक पाता है ,उसका कारण है भारत नेपाल में सामाजिक धार्मिक और सांस्कृतिक सामीप्य।

**References:**

1.ndtv.com- 21 मार्च– 2016,
2.http://www.patrika.com,
3.स्वतंत्रता के पश्चात भारत नेपाल सम्बन्धःएक विवेचनात्मक दृष्टि,विजय कुमार,शोध संचयन।
4-नेपाल में नक्सलवादी हिंसा एवं भारतीय सुरक्षा के परिप्रेक्ष्य में नीतिगत विकल्प – अश्वनी कुमार सिंह ,अमनदीप सिंह चौहान, शोध संचयन
5-दैनिक जागरण – दैनिक समाचारपत्र
6.अमर उजाला –दैनिक समाचारपत्र
7.भारत नेपाल सम्बन्ध एक सिंहावलोकन ,सतीश चंद्र मित्तल, शोध संचयन